ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

जनसंपर्क कार्यालय

PUBLIC RELATIONS OFFICE

आज़ादी का अमृत महोत्सव

महिलाओं के लिए सुरक्षित, स्वस्थ एवं समावेशी विश्वविद्यालय : चुनौतियाँ एवं समाधान' विषय पर हुआ विशिष्ट व्याख्यान

खुले मन से संवाद का वातावरण बनाना आवश्यक : प्रो. सुषमा यादव

वर्धा, 17 जुलाई 2026 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में 'महिलाओं के लिए सुरक्षित, स्वस्थ एवं समावेशी विश्वविद्यालय : चुनौतियाँ एवं समाधान' विषय पर आयोजित विशिष्ट व्याख्यान में यूजीसी स्टीयरिंग कमेटी की अध्यक्ष एवं बीपीएस, महिला विश्वविद्यालय, खानपुर, हरियाणा की पूर्व कुलपति प्रो. सुषमा यादव ने कहा कि महिलाओं के लिए सुरक्षित, स्वस्थ एवं समावेशी विश्वविद्यालय बनाने के लिए खुले मन से संवाद का वातावरण बनाना आवश्यक है। ऐसी समावेशी

व्यवस्था जिसमें शिक्षक, विद्यार्थी और समाज भी शामिल हो।

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा विद्यार्थियों के कल्याण, सुरक्षित एवं सम्मानजनक शैक्षणिक वातावरण के निर्माण हेतु जारी दिशा-निर्देशों के प्रभावी क्रियान्वयन के उद्देश से विश्वविद्यालय की आंतरिक शिकायत समिति के तत्त्वावधान में शुक्रवार, 17 जुलाई को गालिब सभागार में व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. कुमुद शर्मा ने की। इस अवसर पर विशिष्ट वक्ता के रूप में महात्मा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान सेवाग्राम के मनोरोग विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. हर्षल साठे उपस्थित थे। प्रो. सुषमा यादव ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत विभिन्न नियमों का उल्लेख करते हुए कहा कि विद्यार्थियों के साथ शिक्षक का संबंध माता पिता की तरह होना चाहिए। विश्वविद्यालय में पहली बार आने वाले विद्यार्थियों से नैतिकता और मूल्यों पर बात करनी चाहिए। हमें शैक्षणिक उत्कृष्टता के साथ मानव जीवन भी आवश्यक है। उन्होंने शिक्षा के महत्व को लेकर बाबासाहब डॉ. भीमराव अंबेडकर, सावित्रीबाई फुले, स्वामी विवेकानंद, रवीन्द्र नाथ टैगोर के उद्धरणों का जिक्र करते हुए कहा कि शिक्षा व्यक्ति की मानसिकता व परिवेश बदल सकती है। विश्वविद्यालय केवल शोध केंद्र नहीं, अपितु

युवा मन को गढ़ने का स्थान होता है और यहां उनका भविष्य तय होता है। उन्होंने बताया कि सुरक्षित वातावरण के लिए संभावनाओं व आकांक्षाओं के साथ साथ विद्यार्थियों के प्रति चिंताओं को भी समझना आवश्यक है।

अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलपति प्रो. कुमुद शर्मा ने कहा कि शिक्षा एक सार्वजनिक सेवा है और यह बराबरी को सुनिश्चित करने का माध्यम भी है। स्वस्थ संवाद की संस्कृति विकसित करते हुए विश्वविद्यालय के परिसर को सुरक्षित बनाना हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति समावेशी स्थापना का उद्देश्य लेकर चलती है। उन्होंने विश्वविद्यालय में उत्कृष्ट प्रदर्शन का माहौल बनाए जाने पर भी बल दिया। कुलपति प्रो. शर्मा ने प्रो. सुषमा यादव का स्वागत सूतमाला एवं विश्वविद्यालय का प्रतीक चिन्ह प्रदान कर किया।

डॉ. हर्षल साठे ने कहा कि नियम और कानून के अनुपालन के साथ साथ मानवीय दृष्टि से भी समस्याओं का समाधान किया जाना चाहिए। उन्होंने महिलाओं की सुरक्षा की दृष्टि से सुरक्षित पारिस्थितिकी बनाने पर बल दिया।

कार्यक्रम का स्वागत वक्तव्य साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. अवधेश कुमार ने दिया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षा विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. सीमा बर्गट ने किया तथा भाषा विद्यापीठ की अधिष्ठाता प्रो. प्रीति सागर ने आभार ज्ञापित किया। दीप प्रज्ज्वलन तथा कुलगीत गायन से कार्यक्रम का प्रारंभ किया गया तथा राष्ट्र गान के साथ समापन किया गया। इस अवसर पर शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी, शोधार्थी तथा विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।